IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पाश्चात्य चिंतन में महिला मुक्ति का इतिहास : एक विश्लेषणात्मक परिदृष्टि

शोधार्थी :–अशोक गोयल

राजनीति विज्ञान विभाग,

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर।

शोध पर्यवेक्षक :– डॉ. लालकृष्ण शर्मा

शोध सारांश– ''स्वतंत्रता'' एक ऐसी अवधारणा है जिसके लिए कोई एक परिभाषा या समानार्थक शब्द ढूंढना मुश्किल है। विश्व के इतिहास में मुक्ति की अवधारणा अलग–अलग परिप्रेक्ष्य में प्रयोग में लाई जाती है जिसमें से लिंग के आधार पर महिला वर्ग की मुक्ति की विचार एक महत् स्थान रखता है। महिला मुक्ति के आंदोलन में अनेक पड़ाव आए, प्रत्येक पड़ाव में महिलाओं की स्थिति को सुधारने तथा लैंगिक भेदभाव समाप्त करने के लिए अनेकों प्रयास हुए। महिला मुक्ति का संघर्ष एक लम्बा चलने वाला विचार है जिसमें पाश्चात्य चिंतन में अठारहवीं तथा उन्नीसवीं शताब्दी में प्रमुख रूप से प्रकाश में लाया गया। शुरुआती दौर के दासत्व से मुक्ति के लिए महिलाओं को नागरिक स्थिति प्रदान करने की मांग की गई तथा गरिमापूर्ण जीवन का विचार सामने आया। पाश्चात्य चिंतन में वैयक्तिकता का सिद्धांत महत्वपूर्ण है, जिसने महिलाओं को तार्किक तथा विवेकपूर्ण मानते हुए विकास का रास्ता दिया। अठारहवीं शताब्दी से वर्तमान तक महिला मुक्ति के संघर्ष के कई सकारात्मक परिणाम आए तथा महिलाएं पुरुषों के साथ सहचर की भूमिका में आकर सामाजिक विकास में सहयोगी तथा प्रबल वाहक बनी।

संकेताक्षर :– नारीमुक्ति की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, आधुनिक युग तथा नारी मुक्ति का प्रादुर्भाव, एक विचार के रूप में नारीवाद, नारीमुक्ति में प्रमुख विचारकों का योगदान, महिला मुक्ति के विचार के परिणाम।

प्रस्तावना– पाश्चात्य जगत में राजनीतिक और सामाजिक चिंतन का इतिहास मूल रूप से पुरुष केन्द्रीत रहा है। महिलाओं को पाश्चात्य काल में स्वतंत्र नहीं माना जाता था तथा वह पुरुषों पर निर्भर थी। इस समय समाज में लैंगिक पूर्वाग्रहों के चलते महिलाओं को पुरुष की संपत्ति माना

जाता था। प्लेटो तथा अरस्तू के काल से लेकर इक्कीसवीं सदी तक निरंतर महिलाएं अपने ''स्व'' की खोज में लगी हुई है। प्लेटो अपने ग्रन्थ ''रिपब्लिक'' में कहता है कि,दार्शनिक और चिंतन जैसे कार्य सबसे सर्वोत्तम कार्य है किंतु गुलामों, वहशियों और स्त्रियों को इससे दूर रखा जाना चाहिए।

'महिला मुक्ति' का पाश्चात्य इतिहास अधिकारों की मांग तक सीमित नहीं है। यह महिला गरिमा तथा पितृसत्तात्मक समाज में लैंगिक भेदभावों के खिलाफ सं घर्ष का शंखनाद है। 'महिला मुक्ति' के इस संघर्ष को आंदोलन का रूप देने वाली विचारधारा को हम नारीवाद के रूप में जानते हैं। नारीवाद महिलाओं की स्वतंत्रता एवं अधिकारों के लिए लिंग आधारित भेदभाव को समाप्त करने की वकालत करता है।

नारीमुक्ति की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि –

इतिहास के विशाल कालखंड में महिलाएं एक प्रकार से दूसरे लिंग के स्थान पर 'दूसरे दर्जे' के लिंग के रूप में जीवन यापन करती रही। पुराने समय में महिलाओं को हीन दृष्टि से देखा जाता था। अरस्तू कहता है कि, ''पुरुष की शोभा आदेश देने में है, स्त्री की शोभा उनका पालन करने में है।'' इस प्रकार अरस्तू महिलाओं को पुरुषों के अधीन मानता है। मध्यकाल में ईसाई धर्मशास्त्रियों ने महिलाओं को अधीन समझते हुए उन्हें स्वतंत्रता और अधिकारों से वंचित रखा। थॉमस एक्विनास ने महिलाओं को 'इव' के रूप में देखा तथा महिला को पाप और पतन का कारण माना, इस प्रकार मध्यकाल का इतिहास भी नारी को दोयम दर्जा देकर उसके गरिमापूर्ण तथा स्वतंत्र अस्तित्व को दबा देता है। मध्यकाल में महिलाओं को अधीन बनाए रखने तथा पितृसत्ता को कायम रखने के लिए धर्म, परम्परा तथा नैतिकता जैसी युक्तियों का सहारा लिया। समय के साथ महिलाएं अपने जीवन में व्याप्त असमानताओं और सामाजिक प्रस्थिति को पहचानकर इससे संघर्ष करने में आगे आई तथा इसके लिए एक आंदोलन के रूप में एकत्रित हुई। अरस्तू जैसा तार्किक बुद्धि का व्यक्ति भी अपन समय में व्याप्त स्थापित मान्यताओं को स्वीकार कर लेता है, इसलिए नारीमुक्ति का यह विचार एक कठिन संघर्ष को दर्शाता है।

आधुनिक युग तथा नारी मुक्ति का प्रादुर्भाव –

आधुनिक काल में कई नए विचार अस्तित्व में आए, जिसमें स्वतंत्रता, समानता, लोकतंत्र तथा संप्रभुता इन सभी विचारों के साथ मानव गरिमा तथा व्यक्ति की स्वतंत्र चेतना का गहरा संबंध है। फ्रांस तथा अमेरिकी क्रांति ने विश्व में कुछ महत्वपूर्ण मूल्यों के प्रति मानव का ध्यान आकर्षित किया। फ्रांसीसी क्रांति में ''स्वतंत्रता, समानता एवं बंधुत्व'' का नारा तथा अमेरिकी क्रांति की स्वतंत्र अवधारणा से मानव ने एक नए युग में प्रवेश किया। आधुनिक समय में मैरी वोल्सटोनक्राफ्ट की पुस्तक "A Vindication of the Right of Women" नारीमुक्ति पर प्रथम पुस्तक लिखी। इस पुस्तक के द्वारा नारीवाद की नींव पड़ी। मैरी वोल्सटोनक्राफ्ट का जीवन, उनके संघर्ष की कहानी उन्हें एक मजबूत किरदार बनने की शिक्षा देती है।

मैरी वोल्सटोनक्राफ्ट के अनुसार, यदि स्त्रियों को उपयुक्त शिक्षा प्रदान की जाए, कानूनी तौर पर उन्हें अपने पति से स्वाधीन माना जाए और वे अपनी पसंद से अपनी योग्यता का प्रयोग करने को स्वतंत्र हों तो वे समाज की पूर्ण सदस्य बनने के लिए सक्षम हो जाएंगी, और स्वयं पुरुषों के लिए उपयुक्त सहचर सिद्ध होंगी। इस प्रकार मैरी वोल्सटोनक्राफ्ट ने इस विचार का प्रादुर्भाव किया कि महिलाएं बौद्धिक और विवेकशील कर्ता हैं तथा उन्हें भेदभाव से मुक्ति मिलनी चाहिए।

जॉन स्टुअर्ट मिल की पुस्तक 'The Subjection of Women' में महिला मुक्ति हेतु विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि, महिला और पुरुष का रिश्ता अधीनता पर आधारित न होकर मैत्री पर आधारित होना चाहिए।

मिल के विचार में, स्त्री पीड़ित होती है और उसे समाज द्वारा अपनी क्षमताओं के प्रदर्शन का मौका नहीं मिलता। वे यह दर्शाना चाहते थे कि वर्तमान यौन संबंध, एक यौन की दूसरे से निम्नतर कानूनी स्थिति, अपने आप में गलत है और मानव विकास में प्रमुख बाधाओं में एक, और इसे बिना किसी पक्ष के लिए विशेष अधिकार के संपूर्ण सभ्यता से बदल देना चाहिए। इस प्रकार जॉन स्टुअर्ट मिल महिलाओं की मुक्ति को महत्त स्थान देते हैं।

इस विचार को आगे बढ़ाने में सेनेका फॉल्स कन्वेंशन (1848) जिसे महिला अधिकारों हेतु पहला औपचारिक सम्मेलन कहा जाता है, का महत्वपूर्ण योगदान रहा। नारीमुक्ति के संघर्ष का पहला पड़ाव एक नागरिक के रूप में महिला को मताधिकार की प्राप्ति हेतु संघर्ष था, जिसके परिणामस्वरूप कालान्तर में ब्रिटेन व अमेरिका में महिलाओं को वोट देने का अधिकार मिला। न्यूजीलैंड महिलाओं को मताधिकार देने वाला पहला देश था, जबकि ब्रिटेन 1928 तथा अमेरिका ने 19वें संविधान संसोधन द्वारा 1920 मं महिलाओं को मताधिकार प्रदान किया।

एक विचार के रूप में नारीवाद –

नारीवाद से आशय एक ऐसी विचारधारा से है जो पितृसत्ता तथा उससे निर्मित सामाजिक व्यवस्था के खिलाफ लैंगिक समानता के लिए संघर्ष का आह्वान करता है। इस विचार का जन्म इस बात से होता है कि प्रकृति ने महिला तथा पुरुष को एक समान रूप से विवेकपूर्ण बनाया है जबकि समाज इसमें भेदभाव करके महिलाओं की स्वतंत्रता को बाधित करता है।

हालांकि नारीवाद एक संगठित आंदोलन का रूप नहीं है लेकिन इसकी तमाम धाराएं इस बात पर सहमत हैं कि, महिलाओं की स्थितियों का अच्छा बनाया जाए और इसके लिए स्त्रियों के वोट डालने के अधिकार, शिक्षा प्राप्त करने के समान अवसर, सार्वजनिक जीवन में महत्वपूर्ण पदों को प्राप्त करने के समान अवसर, गर्भपात का कानूनी अधिकार, स्त्रियों की वेशभूषा संबंधी नियमों में छूट इत्यादि शामिल है। एक विचार के रूप में नारीवाद के अनुसार लिंग का जीवशास्त्रीय स्वरूप ही स्वीकार्य है। सामाजिक अवधारणा 'जेंडर' महिला–पुरुष को असमान नजर से देखता है अतः इसका विरोध करता है।

'जेंडर' एक सामाजिक प्रस्थिति का द्योतक है, जो महिला व पुरुष के लिए कार्यों का विभाजन भेदभावपूर्ण तरीके से करता है। नारीवाद या महिला मुक्ति के इस आंदोलन में एक लम्बे विचाराधारात्मक संघर्ष तथा महिला विरोधी ढांचे को बदलने हेतु नारीवाद में अनेक चिंतकों ने अपना योगदान दिया।

जॉन स्टुअर्ट मिल ने 'On Liberty (1959)' में उपयोगितावादी विचार दिये तथा स्वतंत्रता एवं वैयक्तिकता पर अपने विचार प्रस्तुत किये। जॉन स्टुअर्ट मिल की रचनाओं 'Consideration of Representative Government' और 'Utilitarianism' में महिलाओं के अधिकारों की बहाली द्वारा समुदाय के अधिकतम सुख का प्रतिपादन किया। यह एक ऐसी विचारधारा है जा सभी नारी द्वेषी विचारधाराओं और व्यवहारों के विपरीत है।

इस आंदोलन की शुरूआत लैंगिक भेदभाव की समाप्ति के उदार चरण से हुई जो क्रमशः समाजवादी, आमूलवादी, अश्वेत नारीवादी तथा पारिस्थितिक नारीवाद के रूप में विविधताओं के साथ आगे बढ़ी। उदारवादी नारीवाद के अन्तर्गत मैरी वोल्सटोनक्राफ्ट, जॉन स्टुअर्ट मिल, नियोमी वुल्फ, बेट्टी फ्राइडन, हेरियट टेलर जैसे चिंतकों की महती भूमिका रही। उदारवादी नारीवाद के प्रमुख मुद्दों में नागरिक स्वतंत्रता तथा मताधिकार का मुद्दा प्रमुख थे।

समाजवादी नारीवाद के अनुसार, परिवार नामक संस्था पितृसत्तात्मक समाज की आधारशिला है तथा महिला अधीनता को ऐतिहासिक रूप से वर्णित करता है। फ्रेडरिक एंजिल अपनी कृति 'The Origin of the Family, Private Property And the State' में मार्क्सवादी अवधारणा के अनुसार नारी अधीनता का विश्लेषण करता है।

नारीमुक्ति में प्रमुख विचारकों का योगदान –

महिलाओं की अधीनता से संघर्ष तथा सुधार हेतु कई महत्वपूर्ण चिंतकों का योगदान रहा जिन्होंने महिला मुक्ति तथा उसके 'स्व' को जागृत करने में अपने विचारों द्वारा इसे आगे बढ़ाया। मैरी वोल्सटोनक्राफ्ट को प्रथम नारीवादी कहा जाता है इन्होंने अपने जीवन के असहज अनुभवों से सीख लेते हुए महिला मुक्ति के लिए सबसे पहले आवाज बुलंद की।

मैरी ने अपनी प्रसिद्ध रचनाओं में जिनमें 'A Vindication of the Rights of the Women', 'Thoughts on the Education of Daughters' तथा अपने उपन्यासों द्वारा जिनमें 'Mary: A Fiction' तथा 'Maria: Or Wrongs of Women' द्वारा तत्कालीन नारी दुर्दशा का चित्रण किया।

जॉन स्टुअर्ट मिल ने अपने विचार अपनी प्रसिद्ध कृति 'The Subjection of Women', 'On liberty' तथा अन्य लेखों द्वारा प्रस्तुत किये। मिल ने अपनी पत्नि हेरियत टेलर, बेन्थम के उपयोगितावाद तथा काम्टे से प्रभावित होकर महिला मुक्ति हेतु अपने विचारों को प्रदर्शित किया।

सिमोन द बुआ की कालजयी प्रसिद्ध रचना ''द सेकण्ड सेक्स'' ने महिला–मुक्ति में महत्वपूर्ण योगदान दिया। सिमोन द बुआ ने 'सामाजिक प्रस्थिति' जेंडर को चुनौती देते हुए कहा कि, ''महिला पैदा नहीं होती, बनाई जाती है।'' इस प्रकार सिमोन द बुआ लिंग के जीवशास्त्रीय तथा सामाजिक परिप्रेक्ष्य को स्पष्ट करती है।

बेट्टी फ्राइडन का नारीवादी आंदोलन में महिलाओं की भूमिका को विस्तार देने में महत्वपूर्ण योगदान है।

बेट्टी फ्राइडन अपनी रचना 'द फेमिनाइन मिस्टेक' (1963) में तत्कालीन अमेरिकी सामाजिक व्यवस्था में महिला की भूमिका उजागर करती है। तथा महिला के सामने अपने परिचय की समस्या को श्अनामताश कहकर लैंगिक भेदभाव का पर्दाफाश करती है।

किम्बरली क्रेंशॉ एक महत्वपूर्ण आधुनिक महिला मुक्तिवादी है जिन्होंने एक नई अवधारणा का सूत्रपात किया – 'इंटरसेक्शनलिटी'। इनके अनुसार महिलावाद में भी विविधता व्याप्त है, जब लिंग की विभेदता के साथ–साथ कोई महिला नस्लभेद की शिकार भी होती है, तो उसके साथ यह उत्पीड़न दोगुना हो जाता है। जुडिथ बटलर, बैल हुक, बारबरा स्मिथ आदि ने नारी मुक्ति में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

इसके अलावा पारिस्थितिकीय नारीवाद में जिसे हम 'इको–फेमिनिज्म' भी कह देते हैं, महत्वपूर्ण स्थान रखता है। पारिस्थितिकीय नारीवाद की प्रमुख चिंतकों में मारिया मियस, शैली मैकफेंग, वंदना शिवा, सुनिता नारायण तथा मेधा पाटेकर आदि का कार्य महत्वपूर्ण है। यह महिला तथा प्रकृति में निकटता को दर्शाती है और तर्क देती है कि महिलाएं प्रकृति की तरह ही लालन–पालन की प्रकृति रखती है। इस प्रकार नारीवाद अथवा महिला मुक्ति के इतिहास में इन सभी पक्षों का महत्वपूर्ण योगदान है।

महिला मुक्ति के विचार के परिणाम –

पाश्चात्य महिला मुक्ति के इतिहास में स्वतंत्रता एवं अधिकारों की एक क्रमिक यात्रा दिखाई देती है। इस विचार ने पिछली दो सदियों में महिला की स्थिति में आमूलचूल परिवर्तन किया है। आज विश्व के सभी देशों में महिलाओं को मताधिकार प्राप्त हो चुका है। 1920 तक आते–आते अमेरिका ने महिलाओं को वोट देने का अधिकार दिया, ब्रिटेन में 1918 में आंशिक तथा 1928 में पूर्ण रूप से महिलाओं को अधिकार प्रदान किया गया।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने महिलाओं के ''अधिकारों का घोषणापत्र'' (International Bill of Rights of Women) बनाया, जो वर्ष 1979 को अपनाया गया। इसके अनुसार, महिलाओं के विरुद्ध प्रत्येक प्रकार के भेदभाव खत्म करने को प्रयत्नशील है। वर्तमान में पूरे विश्व में महिलाओं का लोकतांत्रिक संस्थाओं में प्रतिनिधित्व बढ़ा है।

वर्तमान में अमेरिकी कांग्रेस में महिलाओं का प्रतिनिधित्व लगभग 28 प्रतिशत है जो कि 19वीं और 20वीं शताब्दी से कहीं अधिक है। पाश्चात्य जगत के सबसे बड़े संगठन यूरोपियन यूनियन की वर्तमान अध्यक्षा 2026 में उर्सुला वॉन डेर लेयन है, जो पाश्चात्य जगत के लगभग 27 देशों का महत्वपूर्ण संगठन है। यूरोपियन आयोग की अध्यक्ष एक महिला होना पाश्चात्य जगत में महिला मुक्ति तथा सामाजिक प्रगति को दर्शाता है। इस प्रकार पाश्चात्य जगत में वर्तमान में महिला की स्थिति विगत सदियों से कहीं अधिक बेहतर है, लेकिन अभी भी प्रमुख उद्योगों तथा संस्थाओं में यह आंकड़ा पुरुषों से कम है।

वर्तमान परिदृश्य में अगर प्रतिवेदनों की बात करें तो ग्लोबल जेण्डर गैप रिपोर्ट के अनुसार पाश्चात्य देश विश्व में शीर्ष पर हैं। ग्लोबल जेण्डर गैप रिपोर्ट 2025–26 के अनुसार आइसलैंड, फिनलैंड, नॉर्वे, जर्मनी आदि यूरोपीय देश लैंगिक समानता में विश्व में सबसे अच्छी स्थिति में हैं।

निष्कर्ष

पाश्चात्य चिंतन में महिला मुक्ति के परिणामस्वरूप विश्व के अन्य लोकतांत्रिक देशों में भी महिला मुक्ति को आगे बढ़ाया। पाश्चात्य विचार औपनिवेशिक काल में पूरे विश्व में फैले जिससे अन्य एशियाई तथा अफ्रीकी देश भी प्रभावित हुए। एशियाई देशों में पाश्चात्य राजनीतिक प्रणाली के साथ–साथ पाश्चात्य विचार भी सम्पर्क में आए जिससे यह पूर्वाग्रहों तथा रूढ़ियों से मुक्ति के लिए अग्रसर हुए। भारतीय दार्शनिक तथा चिंतक राजा राममोहन राय उस समय ब्रिटेन के चिंतकों के सम्पर्क में आए तथा उन्होंने महिलाओं को शिक्षित करने, सती प्रथा पर रोक लगाने तथा विवेकपूर्ण व्यवहार करने हेतु अपने विचार प्रस्तुत किये। राजा राममोहन राय बेंथम से प्रभावित थे तथा उस समय में पश्चिमी दर्शन तथा विचारों की प्रगतिशीलता से परिचित थे। पंडिता रमाबाई, तत्कालीन ब्रिटिश साम्राज्य में एक पढ़ी–लिखी महिला मुक्तिवादी चिंतक थीं, जिन्होंने पाश्चात्य चिंतन के सम्पर्क में आने से अपने सामाजिक रूढ़वादी विचारों का त्याग करके भारत में महिला मुक्ति की वाहक बनीं। इस प्रकार पाश्चात्य चिंतन पूरे विश्व में महिला–मुक्ति के विचार का प्रसारक बना, जिसके प्रभाव में आज तक महिलाएं आगे की राह देख रही हैं। मैरी वोलस्टोनक्राफ्ट के समय की पाश्चात्य सामाजिक स्थिति से निकलकर वर्तमान पाश्चात्य आधुनिक युग में महिलाओं की स्थिति पाश्चात्य चिंतन के सफल विचार को दर्शाता है। अभी भी विश्व के अन्य हिस्सों में पाश्चात्य चिंतन की बदौलत लगातार लैंगिक भेदभाव समाप्ति का उद्घोष प्रसारित हो रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1- अनामिका, 'स्त्री विमर्श की उत्तरगाथा' सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली 2014।

2- गाबा, ओम प्रकाश, 'राजनीति विचारक विश्वकोश', नेशनल पेपरबैक्स, चतुर्थ संस्करण, 2022।

3- वर्मा, एस. एल. 'उच्चतर आधुनिक राजनीति सिद्धांत', नेशनल कम्प्युटर्स, मलिक बुक कम्पनी, संस्करण 2023।

4- दाधिच, नरेश, 'समसामयिक राजनीतिक सिद्धांत', रावत पब्लिकेशन, 2021।

5- मुखर्जी सुब्रत, रामास्वामी सुशिला, 'पाश्चात्य राजनीतिक चिंतन' हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2017।

6- कुमार, अभय, 'अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के सिद्धांतः एक परिचय' (पीयरसन पब्लिकेशन, नोएडा) 2011।

7- जॉन स्टुअर्ट मिल, 'The Subjection of Women' सेनेग पब्लिकेशन हाउस LLP मुंबई, 2020।

8- https://european&union-europa-eu वेबसाइट।

9- ग्लोबल जेंडर रिपोर्ट, 2025, वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम।